# आयुर्वेदीय परम्परा : स्वास्थ्य एवं संस्कृति

*सम्पादक*

डॉ० झिनकू यादव

*सह-सम्पादक*

प्रो० देवव्रत चौबे

श्री सञ्जय कुमार

प्रकाशक

Scanned with CamScanner

| | | |
|---|---|---|
| २२. प्राचीन भारतीय साहित्य में आयुर्वेद एवं वैद्यकीय | कृपानाथ | ११४-१२० |
| २३. आयुर्वेद का उत्स एवं विकास : वैदिककाल के विशेष सन्दर्भ में | अजय प्रताप वर्मा | १२१-१२८ |
| २४. प्राचीन भारतीय सिक्कों में प्रतिबिम्बि वृक्ष तथा उनका औषधीय योगदान | देवेन्द्र बहादुर सिंह, स्मिता यादव | १२९-१३६ |
| २५. भारतीय संस्कृति में आयुर्वेद की अवधारणा | सुधा राव | १३७-१४१ |
| २६. वैदिक साहित्य में अश्विनी कुमार | अभय नारायण गुप्ता | १४२-१४७ |
| २७. संस्कृत साहित्य में आयुर्वेदीय तत्त्व | सञ्जय कुमार | १४८-१५३ |
| २८. चरक संहिता में "अरिष्ट" वर्णन | सतीश कुमार | १५४-१५९ |
| २९. पुराणों में आयुर्वेदीय तत्त्व | अजय शंकर पाण्डेय, सुशील सिंह | १६०-१६२ |
| ३०. चरक संहिता में निदान पंचक | देवव्रत चौबे | १६३-१६६ |
| ३१. लोक में नीम, तुलसी, पीपल : एक समाजवैज्ञानिक दृष्टि | दीनबन्धु तिवारी | १६७-१७१ |
| ३२. जैन आगम साहित्य में आयुर्वेद (चिकित्सा विज्ञान) | महेन्द्र नाथ सिंह | १७२-१७९ |
| ३३. खरतरगच्छीय मुनिजनों द्वारा रचित आयुर्वेद विषयक साहित्य | रूचि सिंह | १८०-१८२ |
| ३४. भिषगशिरोमणि आचार्य हर्षकीर्तिसूरि और उनकी अमरकृति – योगचिन्तामणि | शिवप्रसाद | १८३-१८८ |
| ३५. तन्त्र प्रक्रिया में आयुर्वेदिक प्रयोग | मोहन सिंह मावड़ी | १८९-१९० |
| ३६. प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का महत्त्व | बाकर जहीर | १९१-१९४ |
| 37. Exploring Evidence for Safety and Efficacy of Ayurvedic Medications | Ram Harsh Singh | 195-198 |
| 38. Principals of Management of Mental Disorder in Ayurveda | G.S. Tripathi | 199-204 |
| 39. Concept of health in Ayurveda Samhita | Murlidhar Paliwal | 205-208 |
| 40. Philosophical Basis of Treatment in Indian Medicine | Sujeet Kumar | 209-217 |
| 41. Ecology and Conservation in the Bhumi Sukta of Atharvadea | Uma Pant | 218-222 |


*

Scanned with CamScanner

# संस्कृत साहित्य में आयुर्वेदीय तत्त्व

सञ्जय कुमार*

विश्ववाङ्मय में संस्कृत साहित्य का अत्यन्त महनीय स्थान रहा है। इसमें समष्टिगत एवं व्यष्टिगत जीवन के समस्याओं का बहुविध विवेचन किया गया है। मनुष्य की समस्याओं में स्वास्थ्य का विशेष महत्त्व है। स्वास्थ्य ही जीवन के सम्पूर्ण सुखों का मूल है। स्वस्थ व्यक्ति ही पौरुष कार्य करने में समर्थ हो सकता है। स्वास्थ्य ही आयु है। आयु का विशिष्ट ज्ञान ही आयुर्वेद है। आयुर्वेद 'आयुर्' और 'वेद' शब्द से मिलकर बना है। आयुर् का अर्थ है- 'दीर्घ जीवन' और वेद का अर्थ है- 'ज्ञान' इस प्रकार आयुर्वेद शब्द से तात्पर्य है – जिससे दीर्घ जीवन का ज्ञान प्राप्त हो। विविध व्याधियों से पीड़ित मनुष्यों (जीवों) को व्याधिमुक्त करके उन्हें सुख-स्वास्थ्य प्रदान करना आयुर्वेदावतार का मुख्योद्देश्य रहा है। सामाजिक सुख-समृद्धि के लिए शारीरिक निरोगता एंव अनामयता अनिवार्य है। कहा भी गया है-

शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्।[१]

अर्थात् मानव के सांसारिक धर्म पालन का प्रमुख साधन स्वास्थ्य है और यह केवल चिकित्साशास्त्र के परिज्ञान द्वारा ही सम्भव है।

प्राचीन काल में औषधि-विज्ञान समुन्नत अवस्था में था। सभी रोगों की चिकित्सा वनस्पतियों से की जाती थी। वनस्पतियों का ज्ञान रखने वाले को समाज में वैद्य[२], भिषक्[३] और चिकित्सक[४] कहा जाता था। ये चिकित्सक रोगनिदान और रोगोपचार में सिद्ध हस्त होते थे। वे चरकसंहिता एवं सुश्रुतसंहिता का विधिवत् पारायण किये होते थे तथा उनके विषय को उसी प्रकार आत्मसात भी किये होते थे। 'नैषधीयचरित' से स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है कि वैद्य लोग सुश्रुत एवं चरक संहिता के ज्ञानी होते थे।[५] वे रोगों का उपचार एवं लक्षण इन्हीं ग्रन्थों के आधार पर करते थे। उनके अन्दर लोक-कल्याण की भावना निहित थी। वे परम दयालु होते थे जो दरिद्र एवं दीन रोगियों को निःशुल्क औषधि देते थे।[६] मालविकाग्निमित्र के इस तथ्य से यह भी ज्ञात होता है कि तत्कालीन समय में वैद्य लोग चिकित्सा का शुल्क ग्रहण करते थे तथा इसे अपना व्यवसाय मानते थे। यहाँ एक 'ध्रुवसिद्धि' नामक विष वैद्य का नाम आया है, जो सर्पदंष्ट व्याधियों का विशेषज्ञ था, वह सर्पदंष्ट रोगियों की भली प्रकार चिकित्सा करता था। उस समय सर्पदंष्टं व्यक्ति के प्रभावित अंग को काट कर विष निवारण किया जाता था या जला दिया जाता था या फिर दूषित रक्त को निकाल दिया जाता था।[७] इन विधियों से विष सम्पूर्ण शरीर में नहीं

* *संस्कृत-विभाग, कला-संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।*

Scanned with CamScanner